

## 1 May The Hindu Off the Mark

### संदर्भ

- तेलंगाना स्टेट बोर्ड ऑफ इंटरमीडिएट एजुकेशन' के परिणामों में गंभीर त्रुटियों के कारण 21 छात्रों ने आत्महत्या कर लीं।
- नीति-निर्धारक और नौकरशाहों द्वारा इस प्रक्रिया में लापरवाही के कारण परीक्षा परिणामों में कुछ छात्रों के अनुपस्थित होने पर सफल घोषित किया गया और कुछ उपस्थित छात्रों को अंक नहीं दिए गए और उन्हें अनुत्तीर्ण घोषित कर दिया।
- इस मामले की जांच के लिए राज्य सरकार द्वारा जांच समिति की नियुक्त की और परिणामों को प्रकाशित व नियंत्रित करने वाली कंपनी व सिस्टम पर जांच के आदेश दिए कि कंपनी द्वारा सॉफ्टवेयर एप्लिकेशन के पर्याप्त परीक्षण व जांच के बिना कैसे कंपनी को जिम्मेदारी सौंपी गई।
- सरकार द्वारा सभी पेपरों की समीक्षा की जानी चाहिए और उम्मीदवारों को बिना किसी शुल्क के पेपर जांच के लिए उपलब्ध कराना चाहिए।
- तेलंगाना में इस मुद्दे के बाद यह प्रश्न उठता है कि चयनित निजी एजेंसी की जांच की जाए कि वह जिम्मेदारी को सम्हाल सकती है या नहीं।
- परीक्षकों के बीच भी समझ की कमी थी, क्योंकि सत्यापन के अभाव में सॉफ्टवेयर में गलत आंकड़े दर्ज किए गए। स्वतंत्र सत्यापन और परिणामों की समीक्षा की कमी से इस तरह की त्रुटियां हुई। आवश्यकता है सभी स्कूल बोर्ड तेलंगाना की गलतियों से सीखें।
- परीक्षा में गड़बड़ी से दुःखी छात्रों में आत्महत्या की यह संकटपूर्ण घटना है, आवश्यकता है कि छात्रों को यह समझाया जाए की परीक्षा के अंक मात्र सफलता के एकमात्र निर्धारक नहीं है।
- नीति-निर्माताओं को सभी युवाओं के लिए कौशल विकास व अधिक अवसर पैदा करने की आवश्यकता है। इस तरह की काउंसलिंग में अभिभावकों को भी शामिल किया जाए तो बच्चे के नंबर को एकमात्र निर्धारक समझते हैं।

**For a malnutrition free India**

### संदर्भ

- देश को 2022 तक अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए कार्यक्रमों की प्रभावी निगरानी और कार्यान्वयन की आवश्यकता है। इस चुनावी मौसम में न केवल मतदाताओं से बल्कि बच्चों के जीवन व राष्ट्र को बेहतर बनाने के लिए किए गए वादों को निभाना महत्वपूर्ण है।
- 1975 में समेकित बाल विकास कार्यक्रम और माध्याह्न भोजन योजना को राष्ट्रीय स्तर पर कवर करने के बाद भी भारत उच्च कुपोषण दर से जूझ रहा है।
- पोषण में सुधार और प्रबंधन करना बड़ी चुनौति है, इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए अंतर-क्षेत्रीय रणनीति बनाना आवश्यक है।

- कुपोषण गरीबी, अशिक्षा और रोजगार के अवसरों की कमी के कारण हैं।
- राष्ट्रीय परिणाम स्वास्थ्य सर्वेक्षण के अनुसार भारत में स्टंटिंग की समस्या है। स्टंटिंग का अर्थ आयु के अनुसार लंबाई का कम रह जाना है। 2015-16 में 5 साल से कम उम्र के 35.8% बच्चों कम वजन के थे।
- भारत मानव पूंजी सूचकांक पर 195 देशों में से 158 रैंक पर है। स्वास्थ्य, शिक्षा में निवेश की कमी से आर्थिक विकास धीमा हो जाता है।
- विश्व बैंक के अनुसार 'बचपन में स्टंटिंग के कारण ऊँचाई में 1% की हानि आर्थिक उत्पादकता में 1.4% की हानि के साथ जुड़ी हुई है। स्टंटिंग का प्रभाव भविष्य की पीढ़ियों पर होता है।
- 2015-16 में 53% प्रतिशत महिलाओं में एनीमिया अर्थात् खून की कमी ऐसी स्थिति में गर्भधारण करने से बच्चे की स्थिति पर प्रभाव पड़ता है और यह स्थिति तब और बिगड़ जाती है जब शिशुओं को अपर्याप्त आहार दिया जाता है।

### महत्वाकांक्षी लक्ष्य

- राष्ट्रीय पोषण नीति का उद्देश्य 2022 तक कुपोषण मुक्त भारत बनाना है। यह योजना 2022 तक प्रति वर्ष लगभग 3 प्रतिशत बच्चों में स्टंटिंग की प्रवृत्ति को कम करना है और गर्भवती महिलाओं में एनीमिया की कमी को दूर करने का लक्ष्य रखा है।
- यह एक महत्वाकांक्षी लक्ष्य है, 2006 में स्टंटिंग 48 प्रतिशत था जो 2016 में 38.4 प्रतिशत रहा हो गया अर्थात् एक वर्ष में केवल 1 प्रतिशत कम हुआ।
- यह आकड़ा मंत्रालयों, विभागों पोषण कार्यक्रमों की निगरानी की कमी को बताता है।

### बाल कुपोषण से निपटना

- स्टंटिंग का खतरा उम्र के साथ बढ़ता है और 18 से 23 महीनों के समय यह उच्च स्तर पर होता है। स्तनपान पूरक आहार, पूर्ण टीकाकरण और विटामिन 'ए' तथा पोषण संबंधी पूर्ति परिणाम सुधारने में प्रभावित सिद्ध होंगे।
- हालांकि आकड़े बताते हैं, कि जन्म के एक घंटे के भीतर केवल 41.6% बच्चों को स्तनपान कराया जाता है, तथा 54% को 6 माह तक स्तनपान कराया जाता है और 2 साल से कम उम्र के बच्चों में 9.6% बच्चों को पर्याप्त आहार प्राप्त होता है। भारत को इन क्षेत्रों में सुधार करना चाहिए।
- विटामिन 'ए' की कमी से खसरा और डायरिया जैसी बीमारियों का संक्रमण बढ़ जाता है। लगभग 40% प्रतिशत बच्चों को पूर्ण टीकाकरण और विटामिन 'ए' की खुराक नहीं मिलेगी, रोग की रोकथाम के लिए उन्हें ये उपलब्ध कराए जाने चाहिए।

### राज्यों और जिलों में बदलाव

- NFNS के आकड़ों के अनुसार भारत में शहरी क्षेत्रों की तुलना में ग्रामीण क्षेत्रों में बच्चों की संख्या अधिक है। ग्रामीण परिवारों की कमजोर सामाजिक-आर्थिक स्थिति के कारण, महिलाओं की अशिक्षा व जागरूकता के अभाव के कारण तथा आय की कमी के कारण यह अधिक पाया जाता है।
- कुपोषण चक्र के स्टंटिंग के बोझ को दूर करने के लिए पूर्व और गर्भावस्था के बाद मां और बच्चे दोनों के लिए पोषण संबंधी उपाय किए जाने चाहिए।

### क्षेत्रीय असमान आंकड़े

- भौगोलिक क्षेत्र के संदर्भ में स्टंटिंग की दर बिहार 48 प्रतिशत, उत्तर प्रदेश 46 प्रतिशत और झारखंड में 45 प्रतिशत हैं। जबकि सबसे कम दरें वाले राज्यों में केरल व गोवा में 20 प्रतिशत हैं।
- जबकि सभी राज्यों में पोषण में सुधार हुआ है फिर भी राज्यों के बीच स्टंटिंग की दर में बहुत अधिक परिवर्तन है। छत्तीसगढ़ में स्टंटिंग में गिरावट दर्ज की गई है, तमिलनाडु में इस संबंध में सबसे कम प्रगति हुई है।
- इंटरनेशनल फूड पॉलिसी रिसर्च इंस्टीट्यूट के एक अध्ययन से पता चलता है कि लगभग 40 प्रतिशत जिलों

में स्टॉटिंग 40 प्रतिशत अधिक हैं। उत्तर प्रदेश के 6 जिलों में स्टॉटिंग की उच्चतम दर है।

- यह आकड़ा देखते हुए, गर्भावस्था में स्वास्थ्य और पोषण कार्यक्रमों के अंतर्गत तब तक प्रयास किए जाने की आवश्यकता है जब तक बच्चा 5 वर्ष का नहीं होता।
- भारत को सामाजिक व व्यवहारिक परिवर्तन के साथ एक बहु-आयामी दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता है। कुपोषण को दूर करने के लिए कार्यक्रमों की प्रभावी निगरानी और कार्यान्वयन की आवश्यकता है।

### मुख्य परीक्षा प्रश्न

**प्रश्न-** भारत में जनांककीय लाभांश प्राप्त करने के लिए कुपोषण को दूर करना आवश्यक है। इस संबंध में भारत में कुपोषण की स्थिति पर प्रभाव डालते हुए इसे दूर करने के लिए प्रभावी कार्यक्रमों पर चर्चा करें।

### अंतर्राष्ट्रीय मजदूर दिवस

- विश्व भर में 01 मई, 2019 को अंतर्राष्ट्रीय मजदूर दिवस मनाया गया। भारत ही नहीं विश्व के लगभग 80 देशों में इस दिन राष्ट्रीय छुट्टी होती है।
- इसे 'मई दिवस' के नाम से भी जाना जाता है। यह अंतर्राष्ट्रीय श्रम संघों को बढ़ावा देने और प्रोत्साहित करने के लिए मनाया जाता है।
- आर्थिक प्रगति के लिए प्रभावशाली मजदूरों का होना आवश्यक है। मई दिवस मजदूरों के लाभ के लिए विभिन्न कल्याणकारी कार्यों की ओर इशारा करता है।
- मजदूरों की उपलब्धियों को मनाने के लिए पूरे विश्व भर में एक आधिकारिक अवकाश के रूप में वार्षिक तौर पर अंतर्राष्ट्रीय मजदूर दिवस मनाया जाता है।

### मजदूर दिवस 01 मई को क्यों मनाया जाता है?

- अंतर्राष्ट्रीय मजदूर दिवस मनाने की शुरुआत 01 मई 1886 से मानी जाती है जब अमरीका की मजदूर यूनियनों ने काम का समय 8 घंटे से ज़्यादा न रखे जाने के लिए हड़ताल की थी।
- भारत में लेबर किसान पार्टी ऑफ हिन्दुस्तान ने 01 मई 1923 को मद्रास में मजदूर दिवस की शुरुआत की थी। हालांकि उस समय इसे मद्रास दिवस के रूप में मनाया जाता था।
- मजदूरों के लिए 19वीं सदी के शुरुआत में आठ घंटे काम और बेहतर सुविधाओं की बहाली की गयी। इस तिथि का चयन समाजवादी और साम्यवादी राजनीतिक दलों के संगठन **सेकंड इंटरनेशनल** द्वारा किया गया।

### सिनौली अवशेष

- बागपत के सिनौली (उत्तर प्रदेश) में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) द्वारा कराई जा रही खोदाई में शाही शव पेटिकाएं, रथ, कंका, आभूषण समेत कई ऐसी चीजें मिली हैं, जिन्हें महाभारत काल से जोड़कर देखा जा रहा है।

### इस खोदाई में और हड़प्पा सभ्यता में क्या है अंतर

- हड़प्पा सभ्यता में मुख्य रूप से ताम्र सामान आदि की आकृति एक-दूसरे से अलग हैं।
- ताम्र हथियार बनाने की प्रक्रिया और उनके आकार हड़प्पा सभ्यता की किसी भी खोदाई में मिले साक्ष्यों से नहीं मिलते हैं।
- यहां मिले मनके आदि हड़प्पा तकनीक से अलग हैं।

